A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

तबले के पूरब बाज के घरानों का कलकत्ता में विस्तार एवं वर्तमान स्थिति

Dr. Sandhya Yadav
Guest faculty, Music Department, D S B Campus, Kumaun university Nainital

Read the Article Online

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Yadav, S. (2026). Tabale ke poorab baaj ke gharaanon ka kalakatta mein vistaar evan vartamaan sthiti. Swar Sindhu, 14(1), 06-011.

सारांश

तबले के मुख्य रूप से छः घराने है। प्रत्येक प्रतिष्ठित घराने का एक कलात्मक अनुशासन होता है, जिससे उस घराने की विशेष शैली का जन्म होता है। यही विशिष्ट शैली 'बाज' के रूप में विकसित हुई। इन्हीं वादन शैली के आधार पर तबले के क्षेत्र में मुख्य रूप से दो बाज प्रचलित हैं- पश्चिम बाज एवं पूरब बाज। पश्चिम बाज के अंतर्गत दिल्ली एवं अजराड़ा घराना तथा पूरब बाज के अंतर्गत लखनऊ, फर्रुखाबाद एवं बनारस घराना आता है। कलकत्ता में तबले के पूरब बाज के तीनों घरानों- लखनऊ, फर्रुखाबाद एवं बनारस का तबला वादन का प्रचार-प्रसार करने में विशेष रूप में पं० मन्मथ नाथ गांगुली, हिरेन्द्र कुमार गांगुली उर्फ हीरु बाबू, कृष्ण कुमार गांगुली उर्फ नाटू बाबू, पं० ज्ञान प्रकाश, विश्वनाथ बोस इत्यादि का योगदान प्रमुख रूप से परिलक्षित होता है।

***कुंजी शब्द**: पूरब बाज, लखनऊ घराना, फर्रुखाबाद घराना, बनारस घराना।*

प्रस्तावना

किसी भी प्रदर्शनात्मक या क्रियात्मक कला के प्रस्तुतीकरण के लिए जिस विशिष्ट ढंग या अंदाज को ही उस कला की शैली कहते हैं। शैली वह मुख्य तत्व है जिसमें कलाकार प्रभावशाली ढंग से अपनी कला के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करता है। यही विशिष्ट माध्यम संगीत की विभिन्न विधाओं की शैली कहलाती है। इसी प्रकार तबला वादन की भी अपनी एक विशिष्ट शैली है। तबले के मुख्य रूप से छः घराने है। प्रत्येक प्रतिष्ठित घराने का एक कलात्मक अनुशासन होता है, जिससे उस घराने की विशेष शैली का जन्म होता है। यही विशिष्ट शैली 'बाज' के रूप में विकसित हुई। इन्हीं वादन शैली के आधार पर तबले के क्षेत्र में मुख्य रूप से दो बाज प्रचलित हैं- पश्चिम बाज एवं पूरब बाज। पश्चिम बाज के अंतर्गत दिल्ली एवं अजराड़ा घराना तथा पूरब बाज के अंतर्गत लखनऊ, फर्रुखाबाद एवं बनारस घराना आता है।

कलकत्ता में लखनऊ घराने का विस्तार एवं वर्तमान स्थिति

उस्ताद मोंदू खाँ एवं बख्शू खाँ ने नवाब आसफ़-उद-दौला के दरबार में बतौर तबला वादक नियुक्त होकर लखनऊ घराने की नींव डाली तथा अपने शागिर्दों को तबले की शिक्षा देकर इस घराने को विकसित किया। उस्ताद बख्शू खाँ के तीन पुत्र थे सलारी खाँ, मम्मन खाँ उर्फ मम्मू खाँ एवं केसरी खाँ सभी लखनऊ घराने के महान तबला वादक हुए, लेकिन लखनऊ की परंपरा के शिष्य-प्रशिष्यों की श्रृंखला को गौर करने पर यह परिलक्षित होता है कि वर्तमान समय में लखनऊ घराने की उपलब्ध शिष्यों की वंशावली मम्मन खाँ उर्फ मम्मू खाँ से विकसित हुई है। ऐसे तो मम्मन खाँ के पिता एवं प्रथम गुरु उस्ताद बख्शू खाँ थे, परंतु वे अपने चाचा उस्ताद मोंदू खाँ साहब की विद्वता से बहुत प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने तबले की विधिवत शिक्षा उस्ताद मोंदू खाँ साहब से भी ली। बाद में मम्मन खाँ उर्फ मम्मू खाँ के पुत्र एवं शिष्य मोहम्मद खाँ, घसीट खाँ (भतीजा), बहादुर खाँ (भतीजा), अल्लाह बख्श खाँ (भतीजा) इत्यादि सभी ने लखनऊ घराने के तबले को लखनऊ शहर में बढ़ाया। इसके बाद उ० मोहम्मद खाँ के पुत्र उ० मुन्ने खाँ एवं उ० आबिद हुसैन, उ० आबिद हुसैन के भतीजा एवं दामाद उ० वाज़िद हुसैन, उ० वाज़िद हुसैन के पुत्र उ० अफ़ाक़ हुसैन, उ० अफ़ाक़ हुसैन के पुत्र उ०इल्मास हुसैन एवं इलियास हुसैन तथा उ० इल्मास हुसैन के पुत्र आमिर हुसैन खाँ इत्यादि लखनऊ में रहकर यहां की तबला वादन शैली को सहेज कर धरोहर के रूप में रक्षा एवं समृद्ध किये। वर्तमान में उस्ताद इल्मास हुसैन उनके छोटे भाई इलियास हुसैन एवं उ० इल्मास हुसैन के पुत्र आमिर हुसैन लखनऊ में निवास कर रहे हैं एवं इस घराने के प्रतिनिधि कलाकार के रूप में विद्यमान हैं।

नवाब वाज़िद अली शाह के शासन काल में ही ब्रिटिश हुकूमत का आगमन लखनऊ शहर में हुआ। ब्रिटिश शासन के आगमन के बाद लखनऊ में नवाब वाज़िद अली शाह के दरबार में आश्रय प्राप्त सभी कलाकार नवाब को नजरबंद कर लेने के बाद आश्रयविहीन हो गए और अपनी रोजी-रोटी

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

की तलाश में सभी कलाकार लखनऊ से बाहर पलायन करने लगे। इसी क्रम में लखनऊ घराने के कुछ तबला वादकों का भी कलकत्ता शहर की ओर पलायन हुआ। अब आगे विस्तार पूर्वक लखनऊ घराने के उन उस्तादों एवं उनके शिष्यों के बारे में बताया जा रहा है जिन्होंने कलकत्ता शहर में लखनऊ घराने को समृद्ध एवं उसका विस्तार किया।

उ० मम्मू खाँ साहब की पुत्री छोटी बीबी के पुत्र बाबू खाँ ने कलकत्ता शहर में लखनऊ घराने के तबले की वादन शैली का विस्तार किया। उस्ताद बाबू खाँ के शिष्यों में भगवती चरण बसु, बुद्धेश्वर डे, ज्ञान बनर्जी, मन्मथ नाथ गांगुली, मोतीलाल मिश्रा, नागेंद्र नाथ बसु, गोवर्धन पाल, विधु भूषण दत्त, विनय कांत सरकार, अरुण मुखर्जी इत्यादि प्रमुख तबला वादक हुए जो कलकत्ता में लखनऊ घराने की वादन परंपरा को आत्मसात किए। इनमें से मन्मथ नाथ गांगुली जो कलकत्ता के बड़े रहीस और ब्रिटिश शासन काल के बेरिस्टर थे तथा संगीत के बड़े शौकीन थे। वे अनेक उस्तादों से लखनऊ घराने की तालीम प्राप्त किए तत्पश्चात् अपने पुत्र हिरेन्द्र कुमार गांगुली (हीरू बाबू), शिष्य परेश भट्टाचार्य, राजेंद्र लाल धर, हेमंत भट्टाचार्या, तारक नाथ चटर्जी, जानकी नाथ भट्टाचार्या, अनंत चटर्जी, गजेंद्र चटर्जी, संतोष विश्वास, दक्षिणारंजन चटर्जी (मानडा बाबू) इत्यादि को तबला वादन की शिक्षा दिये।

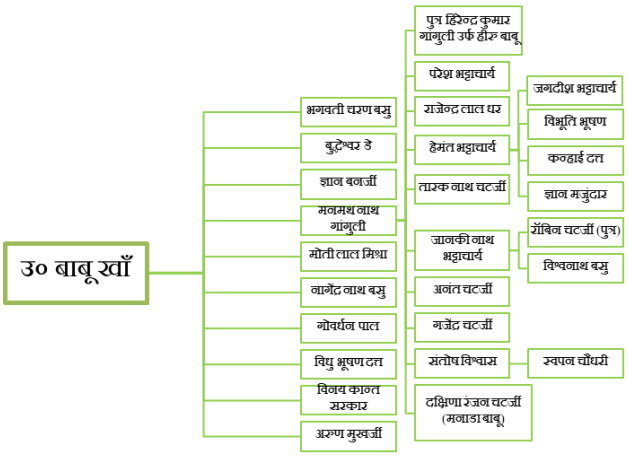

कलकत्ता में लखनऊ घराने का विस्तार करने में मन्मथ नाथ गांगुली को विशेष श्रेय जाता है, वे अपने पुत्र हीरू बाबू को लखनऊ घराने की विधिवत एवं गहरी तालीम दिलवाने के लिए लखनऊ घराने के खलीफा उस्ताद आबिद हुसैन खाँ साहब को कलकत्ता बुलाया करते थे। इनके अलावा उस्ताद आबिद हुसैन खाँ साहब से देवी प्रसन्न घोष, उस्ताद अली कादिर खाँ, जिनके शिष्य कृष्ण कुमार गांगुली एवं राजीव लोचन डे, हिरेन्द्र किशोर राय चौधरी, मणीन्द्र मोहन बनर्जी पुत्र महाराज बनर्जी, चुन्नीलाल गांगुली, क्षितिज चंद्र लहरी, शिशिर भूषण भट्टाचार्या, राय बहादुर केशव चंद्र बनर्जी, ढाका के उस्ताद सुधान खाँ एवं इनके शिष्य दुर्गादास लाखा, शशि मोहन बासक इत्यादि ने भी अपने उस्ताद से प्राप्त लखनऊ घराने की वादन शैली को आगे बढ़ाया।

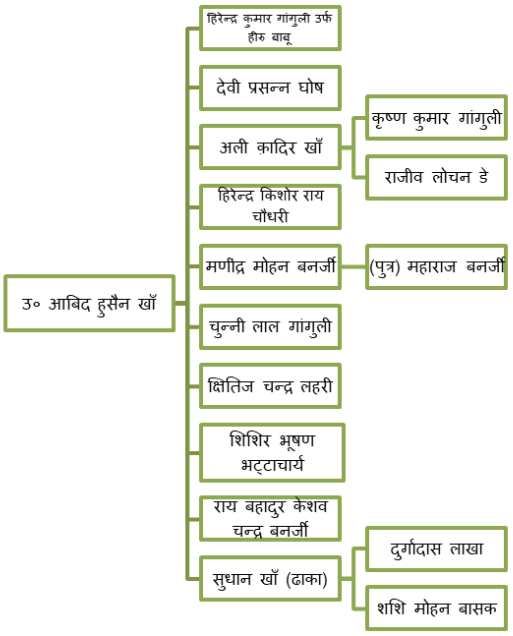

उस्ताद आबिद हुसैन खाँ साहब के बाद इनके दामाद एवं भतीजा उस्ताद वाज़िद हुसैन खाँ ने भी अनेक कलकत्ता के शागिर्दों को लखनऊ घराने की तालीम दी, जिसमें प्रमुख हैं सुनील भट्टाचार्या, गोपाल चंद कन्हाई, महाराज बनर्जी, सुदर्शन अधिकारी, अनिल भट्टाचार्या इत्यादि। इनके बाद लखनऊ घराने के खलीफा उस्ताद अफ़ाक़ हुसैन खाँ साहब से भी लखनऊ घराने की वादन शैली कलकत्ता में फैली। उस्ताद अफ़ाक़ हुसैन खाँ के शिष्य तिमिर रॉय चौधरी, मृणाल कांति पाल इत्यादि हैं। वर्तमान समय के सुविख्यात तबला वादक पंडित अनिंदो चटर्जी ने भी आपसे लखनऊ घराने की तालीम ली है।

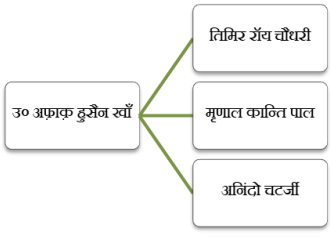

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

मन्मथ नाथ गांगुली के शिष्य हेमंत भट्टाचार्या ने भी अनेक शिष्यों को लखनऊ घराने की तालीम दी जिसमें जगदीश भट्टाचार्या, विभूति भूषण भट्टाचार्या, सुप्रसिद्ध तबला वादक कन्हाई दत्त, ज्ञान मजूमदार इत्यादि प्रमुख है। मन्मथ नाथ जी के शिष्य जानकी नाथ भट्टाचार्या ने भी अपने पुत्र रॉबिन चटर्जी तथा शिष्य विश्वनाथ बसु को लखनऊ की वादन शैली सिखाए। मन्मथ नाथ जी के शिष्य संतोष कुमार विश्वास ने भी लखनऊ घराने की तालीम सफल गुरु के रूप में अपने शिष्यों को दी। वर्तमान समय में विश्व विख्यात तबला वादक पंडित स्वपन चौधरी ने लखनऊ घराने की तालीम अपने गुरु पंडित संतोष कुमार विश्वास से ली है। लखनऊ घराने के तबला वादक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान है।

उस्ताद आबिद हुसैन खाँ साहब के चचेरे भाई नादिर हुसैन खाँ उर्फ छुट्टन खाँ ने भी कलकत्ता में अनेक शिष्यों को तैयार किया जिनमें कृष्ण कुमार गांगुली उर्फ नाटू बाबू, अलाउद्दीन अहमद (ढाका), राजीव लोचंद डे, फूलचंद चक्रवर्ती इत्यादि प्रमुख हैं। इस दौर में हीरू बाबू एवं नाटू बाबू ने कलकत्ता में तबला के प्रचार प्रसार में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हीरू बाबू की डॉक्यूमेंट्री फिल्म में पं० किशन महाराज ने अपने साक्षात्कार में इन दोनों के तबला वादन के क्षेत्र में योगदान को बताते हुए उपरोक्त बात की पुष्टि की है। उ० बख्शू खाँ के शिष्य पं० बेचारम चट्टोपाध्याय एवं मम्मन खाँ उर्फ मम्मू खाँ साहब के शिष्य राम प्रसन्न बंधोपाध्याय (विष्णुपुर परंपरा के संस्थापक), राम कन्हाई (ढाका) आदि तबला वादकों के माध्यम से लखनऊ घराने की तबले की परंपरा बांग्लादेश में पहुंची।

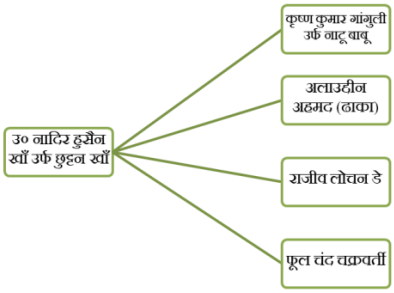

कलकत्ता में फ़र्रुख़ाबाद घराने का विस्तार एवं वर्तमान स्थिति

उ० हाजी विलायत अली खाँ बेहद प्रतिभावान, कल्पनाशील और उच्च कोटि के तबला वादक थे। गुरु से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अपने चिंतन व कल्पनाशीलता से एक नई शैली का निर्माण किए चूंकि उ० हाजी विलायत अली खाँ साहब उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद के रहने वाले थे इसीलिए उन्होंने अपनी वादन शैली को 'फ़र्रुख़ाबाद घराने' का नाम दिया। इस घराने की शिष्य-प्रशिष्यों की परंपरा संपूर्ण देश व विदेश में बहुत विस्तृत हुई है। इस घराने में अनेक महान तबला वादक हुए जिनके योगदान से यह एक समृद्ध घराने के रूप में स्थापित हुआ। प्रारंभ से ही उस्ताद हाजी साहब का रहना शिक्षा के क्रम में लखनऊ में होता रहा और बाद में कुछ वर्ष लखनऊ दरबार में तबला वादन के रूप में नियुक्त हुए। लखनऊ में नवाबों के शासन समाप्त होने पर वे भी रामपुर दरबार चले गए और वहीं तबला वादक के रूप में अपनी सेवा देते रहे। इसके बाद फ़र्रुख़ाबाद शहर में आज तक कोई ऐसा कलाकार नहीं हुआ, जो फ़र्रुख़ाबाद में रहकर अपने तबला वादन का विस्तार किए हो। फ़र्रुख़ाबाद घराना फ़र्रुख़ाबाद छोड़कर देश के अन्य कई शहरों में पहुंचा उदाहरण स्वरूप उस्ताद हाजी साहब के पुत्र उस्ताद निसार अली खाँ इनसे इनके भाई हुसैन अली खाँ ने शिक्षा प्राप्त की एवं इनके शिष्य उस्ताद मुनीर खाँ साहब अपने जमाने के अत्यंत प्रसिद्ध तबला वादक एवं महान गुरु थे। इनके शिष्यों की बहुत लंबी परंपरा है। उस्ताद मुनीर खाँ साहब अपने चाचा उस्ताद हुसैन अली खाँ साहब से भी शिक्षा प्राप्त की। धीरे-धीरे इस घराने के शिष्य-प्रशियों ने देश के अन्य स्थानों पर फ़र्रुख़ाबाद घराने का विस्तार किया

पश्चिम बंगाल की राजधानी कलकत्ता में हमेशा ही संगीत कला एवं कलाकारों को खूब प्रश्रय मिलता रहा है। इसी क्रम में तबला वादन कला को भी यहाँ के संगीत प्रेमियों, जमींदारों एवं प्रश्रयदाताओं का भरपूर आश्रय प्राप्त हुआ है। हाजी साहब के पुत्र उस्ताद नन्हें खाँ के वंश से कलकत्ता में मुख्य रूप से फ़र्रुख़ाबाद घराने के तबला का प्रचार हुआ। नन्हें खाँ के पुत्र उ० मसीत उल्लाह खाँ ने कलकत्ता में अपनी वादन शैली की अनेक शिष्यों को उच्च कोटि की तालीम दी। उस्ताद मसीत खाँ साहब के पुत्र एवं शिष्य उ० करामत्तुल्लाह खाँ आजीवन कलकत्ता में ही निवास करते रहे। उस्ताद मसीत खाँ के शिष्यों में पं० ज्ञान प्रकाश घोष, पं० रविंद्र घोष, पं० कन्हाई दत्त, पं० राय चंद्र बोराल, पं० हीरेंद्र चक्रवर्ती, उ० जीवन खाँ, पं० रतन घोष, पं० राधा गोविंद घोष, पं० निर्मल बनर्जी, पं० हेमंत शंकर एवं इनके शिष्य-प्रशिष्य मणींद्र बनर्जी (मोंटू बाबू), पं० हिरेंद्र किशोर राय चौधरी इत्यादि हुए। उ० करामत्तुल्लाह खाँ साहब के भी कलकत्ता में अनेक शिष्य हुए, इनके पुत्र उ० साबिर खाँ एवं पौत्र आरिफ, आसिफ एवं आमीन वर्तमान में सभी कलकत्ता शहर में रहते हैं। उ० करामत्तुल्लाह खाँ साहब के प्रमुख शिष्यों में पं० ज्ञान प्रकाश घोष का भी नाम आता है। पं० ज्ञान

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

प्रकाश घोष ने अनेक उस्तादों से तबले की शिक्षा प्राप्त की थी। कलकत्ता में तबला वादन के प्रचार में ज्ञान बाबू की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उ० करामत्तुल्लाह खाँ साहब के अन्य शिष्यों में पं० शंकर चटर्जी, पं० अमर डे, पं० कन्हाई दत्त, पं० विमल चटर्जी, पं० अनिल राय चौधरी, पं० कमलेश चक्रवर्ती, पं० स्वपन शिव इत्यादि हुए। पं० ज्ञान प्रकाश घोष ने फ़र्रुख़ाबाद घराने की शिक्षा उ० मसीत खाँ, उ० करामत्तुल्लाह खाँ, उ० अज़ीम बख्श खाँ इत्यादि कई गुरुजनों से प्राप्त की। इन्होंने अनेक शिष्यों को तबले की शिक्षा दी जिसमें उनके पुत्र पं० मल्हार घोष, पं० दिजन घोष, पं० कन्हाई दत्त, निमाई चक्रवर्ती, विजन विश्वास, पं०अनिंदो चटर्जी, पं० शंकर घोष, श्यामल बोस, गोविंद बोस, दिलीप दास, निशी नाथ चटर्जी, मानिक पाल, प्रमोद भट्टाचार्य, किशोर बनर्जी, देवन दत्त, निखिल घोष इत्यादि प्रमुख है। पंडित निखिल घोष ने फ़र्रुख़ाबाद घराने के उस्ताद अमीर हुसैन खाँ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा से भी तबले की शिक्षा प्राप्त की। पंडित निखिल घोष के पुत्र पंडित नयन घोष भी सुप्रसिद्ध तबला वादक हैं।

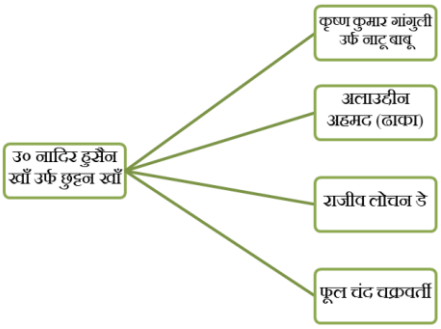

वर्तमान समय में फ़र्रुख़ाबाद घराने के विद्वान तबला वादक पंडित अनिंदो चटर्जी, पंडित गोविंद बोस, पंडित स्वपन शिवा इत्यादि नई पीढ़ी में अपने वादन की शिक्षा दे रहे हैं। पंडित अनिंदो चटर्जी के शिष्यों में उनके पुत्र अनुव्रत चटर्जी, संदीप घोष, रूपक भट्टाचार्य, विवेक पांडया इत्यादि अच्छी शिक्षा ले रहे हैं। पंडित गोविंद बोस के शिष्यों में इमॉन सरकार, पिनाकी चक्रवर्ती, मल्हार गोस्वामी इत्यादि फ़र्रुख़ाबाद घराने के तबले की विधिवत शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। पंडित स्वपन शिवा के शिष्यों में अग्रणी पंडित शुभंकर बनर्जी दुर्भाग्यवश जो अभी करोना काल में दिवंगत हो गए इस पीढ़ी के यशस्वी तबला वादक थे। पं० स्वपन शिवा की पुत्री श्रीमती रिंपा शिवा महिला तबला वादकों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। पंडित शंकर घोष के पुत्र पंडित विक्रम घोष एवं उनके शिष्यों की लंबी श्रृंखला है जिनमें पंडित संजय मुखर्जी अत्यंत गुणी तबला वादक हैं। इसके अलावे भी कलकत्ता में इस परंपरा की लंबी व सुदीर्घ श्रृंखला अच्छुण्ण गति से प्रवाहमान है।

कलकत्ता में फ़र्रुख़ाबाद घराने का विस्तार

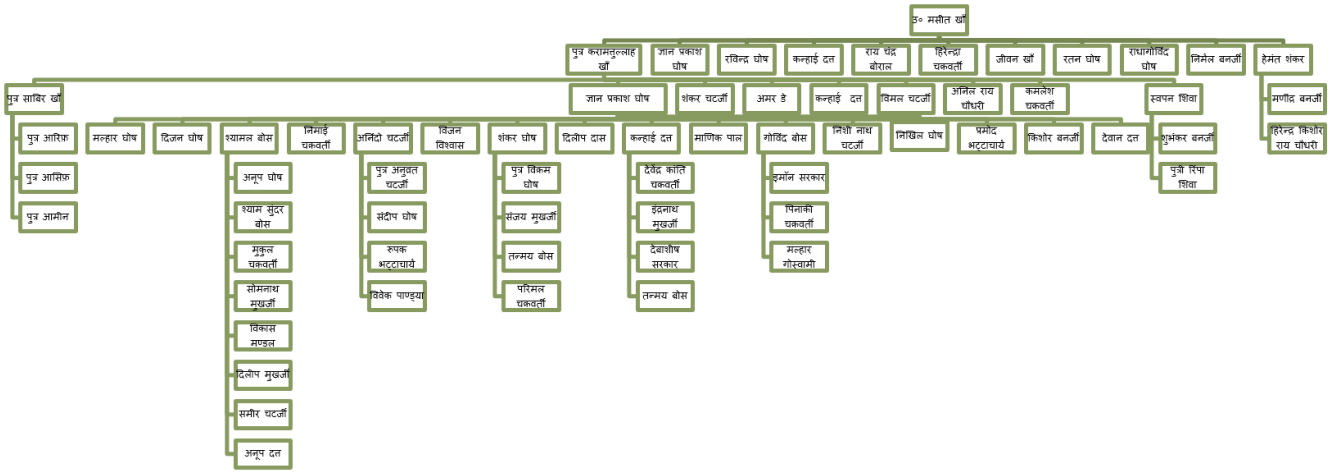

कलकत्ता में बनारस घराने का विस्तार एवं वर्तमान स्थिति-

पं० राम सहाय जी ने लखनऊ से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बनारस में बनारस घराने की वादन शैली की नींव डाली। पं० राम सहाय ने अपने छोटे भाई जानकी सहाय, गौरी सहाय तथा ईश्वरी सहाय इन तीनों भाइयों को तबले की शिक्षा बड़े प्यार एवं उदारता से दी। यह तीनों कुशल नृत्तक थे। बड़े भाई से तबला वादन की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् विलक्षण प्रतिभा एवं अपनी सृजनात्मकता से बनारस घराने को समृद्धशाली बनाया। इन तीनों

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

भाइयों में गौरी सहाय जी के एकमात्र पुत्र भैरों सहाय जी से वंश परंपरा आगे विकसित हुई। पं० भैरों सहाय बाल्यकाल में 6 वर्षों तक अपने बड़े पिता पं० रामसहाय से तबले की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी मृत्यु उपरांत अपने पिता एवं चाचा दोनों से शिक्षा ग्रहण की।

सर्वप्रथम पं० जानकी सहाय के शिष्य पं० लक्ष्मी प्रसाद मिश्र ने बनारस घराने की वादन शैली का कलकत्ता में प्रचार-प्रसार किया। आपके शिष्यों में मन्मथ नाथ गांगुली, पंचानन पाल, अनाथ नाथ बोस एवं कृष्ण कुमार गांगुली प्रमुख हुए। मन्मथ नाथ जी कलकत्ता के बड़े नामी-गिरामी रहीस और अंग्रेजों के जमाने के वरिष्टर थे, बड़े कला प्रेमी थे। उन्होंने अनेक उस्तादों से भिन्न-भिन्न घरानों की वादन विशेषता सीखी और अपने शिष्यों में भी उदारता पूर्वक स्वयं शिक्षा देकर एवं बड़े उस्तादों से शिक्षा दिलाकर तबले की महान सेवा की। आपके शिष्यों में पुत्र हीरेन्द्र नाथ गांगुली (हीरु बाबू) अच्छे तबला वादक हुए। इन्होंने तबले का खूब प्रचार-प्रसार किया।

पं० अनाथ नाथ बोस कलकत्ता के अच्छे कलाकार थे इन्होंने भी अपने पुत्र पं० श्याम लाल बोस एवं पं० गोविंद बोस को तबले की शिक्षा दी। इसके अलावे महानंद चक्रवर्ती, सुबोध नंदी, राधेनाथ, डाकू कुंदन, जयंत चंद, शंकर घोष इत्यादि हुए।

कृष्ण कुमार गांगुली ने भी कलकत्ता में तबले का खूब प्रचार-प्रसार किया। उनके शिष्यों में विश्वनाथ बोस, भतीजा एवं शिष्य निर्मल गांगुली, दुलाल अधिकारी, गौर पाल, सचिन राय, खगेंद्र नाथ भट्टाचार्य, वरुण वरु, सुधीर बनर्जी, बनारसी पाल, शिवपाल, रतन माणिकर, चंद्र मोहन दास, अभय मुखर्जी, हरी भूषण मुखर्जी, महानंद चक्रवर्ती इत्यादि हुए।

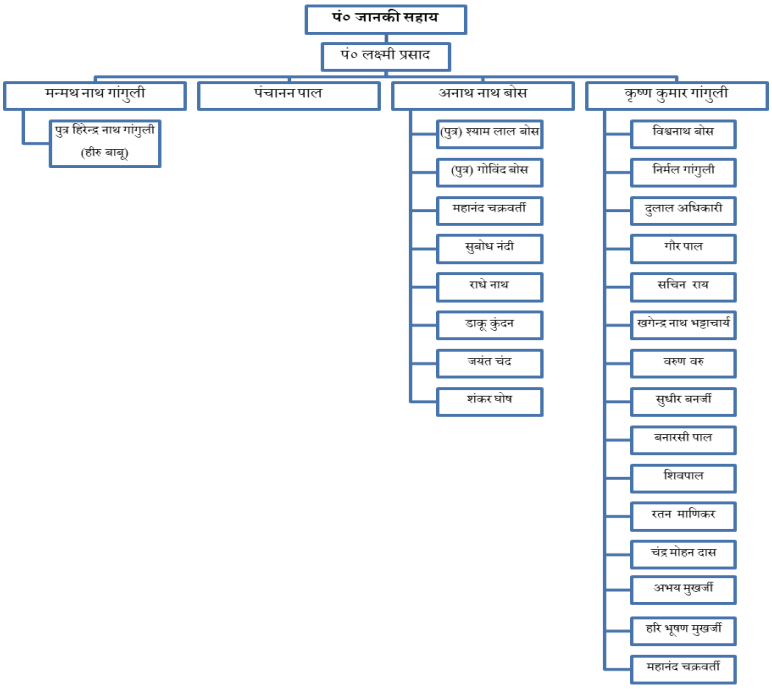

विश्वनाथ बोस, कृष्ण कुमार गांगुली इन दोनों ने बनारस के सुविख्यात गुरु एवं महान तबला वादक पं० कंठे महाराज जी से भी तबला की शिक्षा प्राप्त की। कृष्ण कुमार गांगुली एवं हीरेंद्र किशोर राय चौधरी ने बलदेव सहाय जी के पुत्र दुर्गा सहाय उर्फ नन्हू सूरदास से भी तबले की शिक्षा प्राप्त की। विश्वनाथ बोस के पुत्र कुमार बोस ने बनारस के तबला सम्राट पं० किशन महाराज से तबले की शिक्षा प्राप्त कर बनारस घराने को देश-विदेश में लोकप्रिय बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। पंडित किशन महाराज के शिष्यों में अनिल पालित भी कलकत्ता के तबला वादकों में प्रसिद्ध है। इन्होंने पंडित जानकी सहाय जी के प्रशिष्य पुरुषोत्तम दास जी से भी तबले की शिक्षा प्राप्त की।

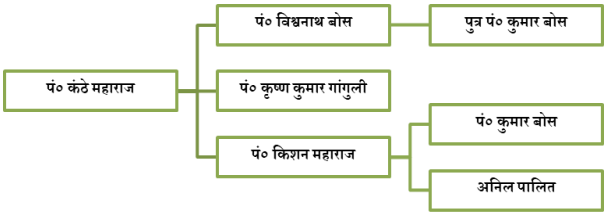

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

पं० बूंदी मिश्र ने भी कलकत्ता के शिष्य मृत्युंजय बनर्जी एवं दिगन पाल को बनारस घराने के तबले की शिक्षा दी। बूंदी मिश्र के पौत्र गोपाल मिश्र व सोहनलाल में भी वरिष्ठ तबला वादक के रूप में संगीत रिसर्च अकादमी में वर्षों से तबला वादन की सेवा दे रहे हैं। गोपाल मिश्र बनारस घराने के महान कलाकार पंडित दामोदर मिश्र के पुत्र एवं शिष्य हैं। आपने भी कलकत्ता में बनारस घराने के तबले का खूब प्रचार-प्रसार किया।

श्यामसुंदर मिश्र तबला के अतिरिक्त इसराज वाद्य के भी कुशल वादक थे। भगत जी के शिष्य श्यामसुंदर मिश्र कालांतर में बंगाल प्रांत के संगीत प्रेमियों के विशेष आग्रह पर आप काशी से कलकत्ता जा बसे और वहां आपने अनेक शिष्यों को तालीम दी।

विद्वान तबला वादक पं० बूंदी मिश्र भी लगभग 100 वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी कलकत्ता में रहते हुए आप के वंशजों ने भी इसे समृद्ध बनाने में विशेष योगदान दिया है। सोहनलाल मिश्र के अनुज पंडित विजय कुमार मिश्र एवं गोपाल मिश्र अच्छे तबला वादक के रूप में रहते हुए अपनी कला को निरंतर समृद्ध किए एवं वहां शिष्यों को सिखा कर कलकत्ता में इस कला का प्रसार किया।

ननकू महाराज आपके बड़े भाई गणेश प्रसाद मिश्र उर्फ भद्दू जी के मार्गदर्शन में ही तबले की शिक्षा प्राप्त की। साथ ही काशी के विद्वान तबला वादक पं० कंठे महाराज जी के जमाता होने के कारण उनकी शिक्षा व सानिध्य का प्रभाव भी आपके ऊपर सहज रूप से पड़ा। आप भी काशी से कलकत्ता चले गए, लगभग 35 से 40 वर्ष कलकत्ता में खूब ख्याति एवं प्रशंसा अर्जित की।

पं० महादेव मिश्र के शिष्य आनंद गोपाल बंदोपाध्याय जीवन भर ITC में अपनी सेवा दिए। कोरोना काल में उनका देहावसान हो गया। आपके पुत्र प्राण गोपाल बंदोपाध्याय भी कलकत्ता में अच्छे तबला वादक हैं।

निष्कर्ष

कलकत्ता में तबले के पूरब बाज के तीनों घरानों- लखनऊ, फर्रुखाबाद एवं बनारस का तबला वादन का प्रचार-प्रसार करने में विशेष रूप में पं० मन्मथ नाथ गांगुली, हिरेन्द्र कुमार गांगुली उर्फ हीरु बाबू, कृष्ण कुमार गांगुली उर्फ नाटू बाबू, पं० ज्ञान प्रकाश, विश्वनाथ बोस इत्यादि का योगदान प्रमुख रूप से परिलक्षित होता है।

संदर्भ सूची

माईणकर, सुधीर; तबला वादन कला और शास्त्र;
मिस्त्री, आबान ई. (2007). तबले की बंदिशें; प्रथम संस्करण; संगीत सदन, इलाहाबाद
Gottlieb, Robert (1977). The Major Traditions of North Indian Tabla Drumming.
यादव, संध्या. (2022). वादन वैशिष्ट्य के आधार पर पूरब बाज के अंतर्गत आने वाले तीनों घरानों (लखनऊ, फर्रुखाबाद तथा बनारस) का विवेचनात्मक अध्ययन; शोध-प्रबंध, खैरागढ़ : इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय